श्रीवीतरागाय नमः ।

श्रीयुक्त पंडित खुशालचंदजी विरचित—

सुगंध-दशमी-व्रत-कथा ।

चौपई ।

पंच-परमगुरु[1] वंदन करूं । ता करि मम अघ-बंधन[2] हरूं ॥
सार सुगंध-दशैं-व्रत-कथा । भाषत हूँ भाषी जिन[3] यथा ॥ १ ॥

१ पंच परमेष्ठी । २ पापकर्म ३ जिनेन्द्र देव ।

अरु गुरु शारदके परसादे। कहस्यूँ भेद सार पूजादि ॥
जे भवि यह व्रत करि हैं सही। ते स्वर्गादिक पदवी लही ॥ २ ॥
सनमति-जिन गौतम मुनिराय। तिनके क्रमं नमि श्रेणिकराय ॥
करत भयो इम थुतिं सुखकार। विनकारण जगबंधु करार ॥ ३ ॥
भव्य-कमल प्रतिबोधन सूरि। मुक्तिपंथ निरवाहन धूँरि ॥
श्रुत-वारिधिकों पोतं समान। इंद्रादिक तुम सेवक जान ॥ ४ ॥
व्रत सुगंध-दशमी यह सार। कीनो किन किमि विधि विस्तार ॥
अर याको फल कैसो होय। मोकों उपदेशो मुनि सोय ॥ ५ ॥
मगध देशके तुम भूपाल। सुन व्रतकी सु कथा सुखकार ॥
यह परसनं तुम उत्तम कियो। मैं भाषूं जो जिन उच्चरयो ॥ ६ ॥

---

१ शारदा-जिनवाणी। २ प्रसादसे। ३ चरण। ४ स्तुति। ५ जगतके बंधु। ६ भव्य जीवोंके हृदयरूपी कमलको जाग्रत करनेवाले सूरज। ७ धुरी। ८ शास्त्र समुद्रको। ९ जहाज। १० प्रश्न।

सुनत मात्र व्रतको विस्तार । पाप अनंत हरै ततकाल ॥
जे करतें क्रमतें शिव[1] जाय । और कहा कहिये अधिकाय ॥ ७ ॥

दोहा ।

जम्बूद्वीपविषैं यहै, भरतक्षेत्र शुभ जानि ।
महा देश काशी लसै, पुर वानारस मानि ॥ ८ ॥

चौपई ।

पद्मनाभि जाको भूपाल । कीनो वसु[2] मदको परिहार ॥
सप्त विसन[3] तजि गुण उपजाय । ऐसे राज करै सुखदाय ॥ ९ ॥
श्रीयमती जाके वर[4] नार । निज पतिकूँ अति ही सुखकार ॥
एक समय वनक्रीड़ा हेतैं[5] । जावैथो निज भूति[6] समेत ॥ १० ॥
पुर नजीकसौं ही जब गयो । निज मनमाहीं आनँद लह्यो ॥
तब ही एक मुनीश्वर आय । मास वास करिकैं तब ताय ॥ ११ ॥

१ मोक्ष । २ आठ । ३ व्यसन । ४ श्रेष्ठ । ५ के लिये । ६ विभूति ।

असन[1] काज आते मुनि जोये[2] । रानीसों भाषे नृप सोय ॥
तुम जावो भोजन द्यो सार । कीजौ मुनिकी भक्ति अपार ॥ १२ ॥
यह सुनि रानी मन इम धर्यौ । भोगनमें मुनि अंतर कर्यौ ॥
दुखकारी पापी मुनि आय । मेरो सुख इन दियो गमाय ॥ १३ ॥
मनहीमें दूखी अति घनी । आज्ञा मान चली पतितनी ॥
जाय दियो भोजन ततकाल । आगें और सुनो भूपाल ॥ १४ ॥
मुनि भूपतिके ही घर गयौ । रानी असन महा निंद दयौ ॥
कड़वी तूंबीको[3] आहार । दियौ मुनीश्वरकौं दुखकार ॥ १५ ॥
भोजन करि चाले मुनिराय । मारग-माहिं गहलं[4] अति आय ॥
पर्यौ भूमिपर तब मुनिराज । कीनो श्रावक देखि इलाज ॥ १६ ॥
तातें मुनी महा दुख पाय । सून होय गये अधिकाय ॥
धिक्कारहि ताकूं अति घणूं[5] । दुष्ट स्वभाव अधिक जातणूं ॥ १७ ॥

१ आहार । २ देखकर । ३ तूबडी । ४ नशा । ५ ज्यादा ।

सुनी बात राजा दुख पाय ॥
तवहीं वनसों आयो राय । सुनी बात राजा दुख पाय ॥ १८ ॥
रानीसों खोटे वच कहे । वस्त्राभरण खोंसि[1] कर लये ॥
काढ़ि दई[2] घर-बाहिर जबै । दुखी भई अति ही सो तबै ॥
कुष्ठातुर[3] हो आरति[4] कियौ । प्राण छोड़ महिषी[5] तन लियौ ॥१९॥
याकी मात भैंस मर गई । तब तिहिं अति दुर्वलता लई ॥
एक समै कर्दममधि[6] जाय । मगन भई नाना दुख पाय ॥ २० ॥
तहांथकी देख्यो मुनि कोय । सींग हिलाए क्रोधित होय ॥
तब ही पंकविषैं[7] गड़ि गई । प्राण छोड़ि खरिणी[8] उपजई ॥ २१ ॥
भई पांगुरी पिछले पायँ । तब ही एक मुनीश्वर आय ॥
पूरव वैर सु मनमें ठयौ । तवहि कलुष[9] परिणाम जु भयौ ॥ २२ ॥

---

१ छीन लिये । २ निकाल दी । ३ कुष्ठ रोगसे पीड़ित । ४ आर्त्तध्यान । ५ भैंस । ६ कीचड़में ।
७ कीचड़में । ८ गधी । ९ कलुषित ।

दोहा।

कियो क्रोध मनमें घणूं, दई दुलत्ती जाय ।
प्राण छोड़ निज पापतैं, लई शूकरी[1] काय ॥ २३ ॥
स्वानादिकके[2] दुःखतैं, भूखी प्यासी होय ।
मरि चांडालीकैं सुता, उपजी निंदक लोय[3] ॥ २४ ॥

चौपई।

गर्भ आवतां विनस्यौ तात । उपजंता तन त्यागयौ मात ॥
पालैं सुजन मरैं फुनि सोय । अरु आवत तनमें बदबोय ॥ २५ ॥
इक जोजनलौं आवै बास । ताहिथकी आवै नहिं सांस ॥
पंच अभख फल खावौ करै । ऐसी विधि वनमें सो फिरै ॥ २६ ॥
तहाँ एक मुनि शिर्षयुत[4] देखि । राग द्वेष तजि शुद्ध विशेष ॥
ता. वनमें आये गुण-भरे । लघु[5] मुनि गुरुसों[6] परसन[7] करै ॥ २७॥

१ सुअर । २ कुत्तोंके । ३ लोक । ४ शिष्यसहित । ५ छोटे । ६ बड़ेसे । ७ प्रश्न ।

स्वामी कारण मोहि बताय ॥
वास निंद्य आवै अधिकाय । जे प्राणी ऋषिकों दुखदाय ॥२८॥
मुनि भाषैं सुन मन वच काय । मुनि-निंदा सम अघ कोउ नहीं ॥
ते नाना दुख पावै सही । मुनी दुखायोथो अधिकाय ॥ २९ ॥
कन्या यह पूरव भव माहिं । भई वधिककैं कन्या आय ॥
ता करि तिरयंगमें दुख पाय । सुनि संशय भाग्यौ ततकाल ॥३०॥
सो यह देखि फिरत है बाल ।

दोहा।

फुनि गुरुसौं इम शिष कहे, अब किम इन अघ जाय ।
मुनि बोले जिनधर्मकौं, धारे पाप विलाय ॥ ३१ ॥

चौपई।

गुरु-शिष-वचन सुता इम सुन्या । उपशम-भाव सुखाकरै मुन्याँ ॥
पंच अभख फल त्यागे जबै । असन मिलन लाग्यो शुभ तबै ॥३२॥

१ तिर्यंचगतिमें । २ सुखकी खानि । ३ समझा ।

शुद्ध भावसौं छोड़े प्रान । नगरि उजेनी श्रेणिक जान ॥
तहां दलिद्री द्विज[1] इक रहै । पाप उदै[2] करि बहु दुख लहै ॥ ३३ ॥
ता द्विजकैं सो पुत्री भई । पिता मात यमके बस थई[3] ॥
तब यह दुखवंती अति होय । पाप समान न वैरी कोय ॥ ३४ ॥
कष्ट कष्ट करि वृद्धं जु भई । एक समै सो वनमें गई ॥
तहाँ सुदर्शन थे मुनिराय । यशःसेन राजा तहँ जाय ॥ ३५ ॥
धर्म सुन्यो भूपति सुखकार । यंह फिरि गई तहां तिहिं वार ॥
अधिक लोक कन्या कूँ जोय । पाप थकी ऐसो पद होय ॥ ३६ ॥

दोहा।

जास समै यह कन्यका, घासपुंज सिर धारि ।
खड़ी मुनीश्वर वचन सुन, फुनि निज भार उतारि ॥ ३७ ॥

---

१ ब्राह्मण । २ उदय । ३ मर गये । ४ बड़ी । ५ घासका गट्ठा ।

चौपई।

मुनि मुखतैं सुनि कन्या भाय। पूरव भव सुमरन तब थाय ॥
याद करी पिछली वेदनां। मूर्छा खाय परी दुख घना ॥ ३८ ॥
तब राजा उपचार कराय। चेत करी फुनि पूछि बुलाय ॥
पुत्री तू ऐसी क्यों भई। सुनि कन्या तब यों वरनई ॥ ३९ ॥
पूरव भव विरतंत बताय। मैं जु दुखायो थो मुनिराय ॥
करी तूंबिकाको आहार। दीनो मुनिकौं अति दुखकार ॥ ४० ॥
सो अघ अबलौं अति दुख दहै। इम सुनि नृप मुनिवरसौं कहै ॥
यह किहँ विधि सुख पावै अबै। सो मुनिराज बखानै तबै ॥ ४१ ॥
जब सुगंधदशमी व्रत धरै। तब कन्या अघ-संचय हरै ॥
कैसी विधि याकी मुनिराय। तब ऋषि भादव मास बताय ॥ ४२ ॥

१ आघ—दुःख।

सुदि पंचमि दिनसौं आचरै । यथाशक्ति नवमीलों करै ॥
दशमी दिन कीजै उपवास । ता करि होय अधिक अघ नास ॥४३॥
पूजे चौवीसौं जिन सार । दश पूजा करि वसु परकार[1] ॥
दश स्तोत्र पढ़िये मनलाय[2] । दश सुखको घट[3] सार बनाय ॥ ४४ ॥
तामें पावक[4] उत्तम धरै । धूप-दशांग खेय अघ हरै ॥
सप्त धान्यको साथी[5] सार । करि तापर दश दीपक धारि ॥ ४५ ॥
ऐसे पूज करै मनलाय । सुखकारी जिनराज बताय ॥
तातैं यह विधि पूजा करै । सो भवि जीव भवोदधि[6] तरै ॥ ४६ ॥

दोहा ।

जिनकी पूज समान सुख, हुआ न ह्वैसी कोय ।
स्वर्गादिक पदकौं धरै, फुनि दे है शिव जोय ॥ ४७ ॥

---

१ प्रकार । २ मन लगाकर । ३ घड़ा । ४ अग्नि । ५ साथिया । ६ भव-समुद्र ।

चौपई।

दश सम्वतसरलौं जो करै। ताहींकै निजगुण विस्तरै ॥
करै वहुरि उद्यापन राय। सुनहु सु विधि तुम मन वच काय ॥४८॥
महाशांति अभिषेक करेय। जिन आगें वर पुष्प धरेय ॥
जो उपकरण धरै जिनथान। ताकौ भेद सुनौ चित आन ॥ ४९॥
दश जु वरनकौ चँदवा लाय। सो जिनविंवनपर तनवाय ॥
और पताका दश ध्वज सार। बाजै घंटा नाद[1] अपार ॥ ५०॥
मुक्त-मालकी शोभा करै। चामर[2] युगल[3] अनूपम[4] धरै ॥
और सुनो आगें मनलाय। प्रभुकी भक्ति किये सुख पाय ॥ ५१॥
धूपदहन[5] दस धरै जु आन। सिंहपीठ आदिक पहिचान ॥
इत्यादिक उपकरण मँगाय। भक्तिभावयुत भव्य चढ़ाय ॥ ५२॥

---

१ आवाज। २ चवर। ३ दो। ४ अनुपम। ५ धूपदान।

दान अहार आदि चउ[1] देय। ता करि भवि[2] अधिको फल लेय ॥
आर्याकौं[3] अम्बर[4] शुभ देउ। शास्त्र कमंडल भेंट करेहु ॥ ५३ ॥
यथायोग्य मुनिकौं दे दान। इत्यादिक उद्यापन जान ॥
जो न इसी है शक्ति लगार। थोरोही[5] कीजे हित धार ॥ ५४ ॥
जो न सर्वथा[6] घरमें होय। तो दूनों कीजे व्रत सोय ॥
पण[7] व्रतकौं करिये मन लाय। जातैं स्वर्ग मोक्ष फल थाय ॥ ५५ ॥

दोहा।

शाकपिंडके दानतैं, रत्नवृष्टि है राय।
यहां द्रव्य लागै कहां, भावनिकौ अधिकाय ॥ ५६ ॥
तातैं भक्ति उपायकैं, स्वातमहित[8] मन ल्याय।
व्रत कीजे जिनवर कह्यो, इम सुनकरि तब राय ॥ ५७ ॥

१ चार प्रकार। २ भव्य। ३ अर्यिकाको। ४ वस्त्र। ५ थोडा। ६ बिलकुल। ७ परन्तु—किन्तु। ८ अपने आत्माके हितके लिये।

चौपई।

द्विज कन्याकौं भूप बुलाय। व्रत दशमी सुगंध वरलायं॥
राय सहाय थकी व्रत करयौ। पूरव पाप-बंध सब हरयौ॥ ५८॥
उद्यापन करि मन वच काय। और सुनो आगें मन लाय॥
एक कनकपुर जानो राय। नाम कनकप्रभ तसु भूपाल॥ ५९॥
नारि कनकमाला अभिराम। राजश्रेष्ठि इक जिनदत नाम॥
जाकें जिनदत्ता वर नार। तिहि ताके लीनो अवतार॥ ६०॥
तिलकमती नामा गुण भरी। रूप सुगंध महा सुंदरी॥
क्योंइक[2] पाप उदय फिरि आय। प्रान तजे ताकी तब माय॥ ६१॥
जननी[3] बिनु दुख पावै बाल। और सुनौ श्रेणिक भूपाल॥
जिनदत यौवनमयं थौ जबै। अपनो व्याह विचारयो तबै॥ ६२॥

१ ग्रहण किया। २ कछुइक। ३ माता। ४ जवान।

गोवरधनपुर नगर सुजान । वृषभदत्त वाणिज[1] तिहिं थान ॥
ताके एक सुता शुभ भई । वन्धुमती तसु संज्ञा[2] दई ॥ ६३ ॥
तासों कीनो श्रेष्ठि विवाह । बाजा वाजे अधिक उछाह ॥
पराणि[3] सु घर ल्यायौ सुखसार । आगे और सुनो विस्तार ॥ ६४ ॥

दोहा ।

सुख भोगत कन्या भई, ताकों लखि[4] तसं[5] माय ।
नाम धरयो तव मोदतैं, तेजोमती सुभाय ॥ ६५ ॥

चाल-छंद ।

प्यारी माताकों लागै । नहिं तिलकमतीसों रागै[6] ।
नाना विधि करि दुख द्यावै । ताके मनमें नहिं भावै ॥ ६६ ॥
तव तात सुता सु निहारी । कन्या यह दुखित विचारी ।
तव दासी आदिक नारी । तिनसों इम श्रेष्ठि उचारी[7] ॥ ६७ ॥

१ वैश्य-बनिया । २ नाम । ३ ब्याहकर । ४ देखकर । ५ उसकी । ६ प्रेम न करे । ७ कहा ।

याकी सेवा सुखकारी । कीजौ तुम भक्ति विचारी ।
ऐसे सुनते सुख पावै । तव नीकी भांति खिलावै ॥ ६८ ॥

चौपई ।

एक समै कंचनप्रभ राय । द्वीपांतर जिनदत्त पठाय ॥
नारीसों तव भाषै नाय[1] । हमें राय द्वीपें जु खिनायें[2] ॥ ६९ ॥
तातें एक सुनो तुम वात । यह दो परण्याजो[3] हरषात ॥
अष्ट गुणांयुतं[4] जो वर[5] होय । इनकें करि दीजो अवलोयं[6] ॥ ७० ॥
इम कहि द्वीप चल्यो ततकाल । और सुनो श्रेणिक भूपाल ॥
आवै करन सगाई कोयं[7] । तिलकमती जांचै तव सोयं[8] ॥ ७१ ॥
वंधुमती भाषै जव आय । यामें औगुण हैं अधिकाय[9] ॥
मम पुत्री गुणवंती घर्णी[9] । रूप आदि शुभ लक्षण भर्णी[10] ॥ ७२ ॥

---

१ नाथ-पति । २ भेजवा है । ३ विवाह कर देना । ४ आठ गुणोंसे युक्त । ५ दूला । ६ देखकर । ७ जो कोई । ८ वह । ९ वहुत । १० पढी हुई ।

तातैं मो कन्या शुभ जानि । वरं नछत्र व्याहो तुम आनि ॥
ते इनकी माने नहिं बात । तिलकमती जांचे शुभ गात॥ ७३ ॥
कहे फेरि सो योंही सही । मनमें कपटाई धरि लई ॥
व्याह समै कन्या मम सार । करदेस्यूं व्याहित जिहिं वारं ॥ ७४ ॥
करी सगाई हर्षित होय । व्याह समै आये तव सोय ॥
वंधुमती फेराकी वार । तिलकमती वहु भांति सिंगारि ॥ ७५ ॥
घड़ी दोय रजनी जव गई । तिलकमतीको निज सँग लई ॥
जव हिंमसान-भूमि-मँधि जाय । पुत्रीको तिहिं थान पठाय ॥७६ ॥
तहां दीपं जोए शुभ चार । पूरे तेल उद्योतं अपार ॥
चोगिरदा दीपक चउं धरे । मध्य तिलकमति थिरता करे ॥ ७७ ॥

---

१ श्रेष्ठ-उत्तम । २ देह—अंगकी । ३ [illegible] । ४ शृंगार करके । ५ रात ।
६ श्मशानमें । ७ दिया । ८ भरकिये । ९ प्रकाश । १० चार ।

तिलकमतीसों भाखी जहाँ । तवं भरतां आवेगो यहां ॥
ताहि विवाहि आवज्यो वाल । इम कहकरि चाली ततकाल ॥७८॥
आधी रात गई तव राय । महल थकी लखि वितरकं लाय ॥
देवसुता वा यक्षिनि कोय । ना जानें वा किन्नरि होय ॥ ७९ ॥
के यह नारी यहां को आय । ऐसी विधि चितवन करि राय ॥
हस्तं खड्ग ले चाल्यौ तहां । तिलकमती तिष्ठेथी जहां ॥

दोहा ।

जाय पूछियौ राजई, तू कुणं है इह थान ।
तिलकमती सुनिकें तवै, ऐसी भांति वखानं ॥ ८१ ॥
भूपति मेरे तातकूं, रतन सु द्वीप पठार्य ।
मोकूं मम माता यहां, थापि गई अव आय ॥ ८२ ॥

---

१ तेरा । २ भर्त्तार—पति । ३ वितर्क-सदेह । ४ हाथ । ५ कौन । ६ कहती हुई । ७ पिताको । ८ भेज दिया ।

चौपई।

भाखि गई इन थानक कोय। आवैगो तो[1] भरता सोय॥
यातैं तुम आये अब धीर। मैं नारी तुम नाथ गहीर[2]॥ ८३॥
सुनि राजा तब व्याह सु करयौ, रैनि[3] रह्यौ तेठैं[4] सुख धरयौ॥
राजा प्रात समय अवलोय। निज-मंदिरकों[5] आवन होय[6]॥ ८४॥
तिलकमती ऐसे तब कही, अबतौ तुम मेरे पति सही॥
सर्प जेमं[7] डसि जावो कहाँ। सुनि इम भाषे भूपति तहां॥ ८५॥
निशिकी निशि आस्यूं तुम पास। तूं तो महा शर्मकी[8] राशि॥
तिलकमती पूछे सिर नाय। कहा नाम तुम मोहि बताय॥ ८६॥
राजा गोप्य कह्यो निज नाम। इम सुनि त्रिय पायो सुख धाम॥
यों कहि अपने थानक गयो। तबसैं ही परभात सु भयो॥ ८७॥

* * * * * *

१ तेरा। २ ग्रहण करो। ३ रात। ४ तहाँ। ५ राजमहलको। ६ आनेको हुआ। ७ जैसे। ८ सुखकी ढेरी।

वंधुमती कहि कपट विचारि । तिलकमती तो है दुखकार ॥
व्याह समै उठि गइ किहं थान । जनजनसों पूछे दुख मान ॥ ८८ ॥

दोहा ।

देखो ऐसी पापिनी, गई कहां दुखदाय ।
ढूंढत ढूंढत कन्यका, लखी मसाने जाय ॥ ८९ ॥
जाय कहे दुखदा सुता, इह थानक किम आय ।
भूत प्रेत लाग्यौ कहा, ऐसी विधि वतलाय ॥ ९० ॥

चौपई ।

तिलकमती भाषे उमगाय । तैं भाख्यौ सो कीनो माय ॥
वंधुमती करि तुंग पुकार । देखो है यह असति उचार ॥ ९१ ॥
जानूं कहा करै इह आय । व्याह समै दुख दिया अघाय ॥
तेजोमती विवाहितकरी । साहाकी समयौ नहिं टरी ॥ ९२ ॥

१ किस । २ कैसी । ३ जोरकी । ४ असत्य-झूठ । ५ भरपेट । ६ लग्नकी । ७ घडी ।

खिजि[1] भाखी उठ चल घर अबै । ले आई अपने घर तबै ।
तिलकमतीसों पूछे मात । तैं कैसो वर[2] पायो रात ॥ ९३ ॥
सुता कहै वरियो[3] हम गोपि । रैनि परणि[4] परभातं[5] अलोपि ॥
बंधुमती भाषी ततकाल । री तैं[6] वर पायो गोपाल ॥ ९४ ॥

दोहा ।

घर इक गेह समीप थौ, सो दीनों दुख पाय ।
नितप्रति रजनीके विषैं, आवे तहाँ सु राय ॥ ९५ ॥
दीप निमित नहिं तेल दे, तबहि अँधेरे माहिं ।
राजा तेठें ही रहैं, सुख पावै अधिकाय ॥ ९६ ॥

चौपई ।

केतेइकँ[7] दिन ऐसे[8] गये । बंधुमती तब यों वच चये[9] ॥
तोहि गवालातें कहि जाय । दोय बुहारी तो दै लाय ॥ ९७॥

१ खीजकर–चिढ़कर । २ पति । ३ विवाह्या । ४ विवाहकर । ५ प्रभात–सबेरे । ६ तूने । ७ कितने ही । ८ इस प्रकार । ९ कहे ।

तिलकमती आरें[1] कर लई। रात भये निज पतिपें गई॥
करि क्रीड़ा मुख वचन उचारि। नाथ सुनो अरदासें[2] हमारि॥९८॥
युगलैं[3] बुहारी मेरी मात। जाँची है तुमपे हरषात॥
यातैं[4] ला दीजो तुम देव। अंगी कीनो भूपति एव॥ ९९॥
सभा जाय बैठो तव राय। स्वर्णकारें[5] तब सारें[6] बुलाय॥
तिनकों कही बुहारी दोय। अब करि द्यो जो उत्तम होय॥ १००॥
इम सुनि तबहि सु कंचनकार। वेगिं[7] गये घर ले अधिकार॥
स्वर्न सींक सवके मनमोहं[8]। रत्नजड़ित मूठो अति सोहं॥ १०१॥
षोड़श भूषनं[10] और मंगाय। डाबामें धरि चाल्यो राय॥
एक वेषं[11] करि उत्तम लयो। रजनी समय नारि ढिग गयो॥१०२॥

१ हा। २ विनती। ३ दो। ४ इसलिये। ५ सुनार। ६ उत्तम। ७ जलदी। ८ मनमोहक-सुन्दर। ९ सुहावना। १० गहने। ११ कपडा।

रत्नजड़ितकी कोर[1] जु सार। शोभै सारीकें अधिकार[2] ॥
भूषन वेष दये नृप जाय। दोय बुहारी लखत सुहाय ॥ १०३ ॥
नारि चरन नृपके तब धोय। सिर केसनितें पूंछि बहोय ॥
क्रीड़ाकरि बहुते सुख पाय। प्रात समैं नृप तो घर जाय ॥ १०४ ॥
तिलकमती अति हरषित होय। जाय दई सु बुहारी दोय॥
और दिखाये भूषन वेष। माई देख्यौ सार लवेष[3] ॥ १०५ ॥
मनमें दूखि वचन इम कह्यो। तेरो भरता तसकर[4] थयो ॥
राजाके भूषन अरु वेष। लाय दये तोकूं जु अशेष[5] ॥ १०६ ॥
हम सबको दुख द्यासी सोय। इम कहि खोंसिलये दुख होय ॥
यह दलगीर भई अधिकाय। रात विषैं पतिसों कहि जाय ॥१०७॥
भूषन वेष खोंसिलये माय। निज काठैं[6] राखे दुख पाय ॥
राय तबै सम्बोधी जोय[7]। मन चिंता राखो मति कोय[8] ॥ १०८ ॥

१ किनार। २ अधिकतर। ३ लिवाग। ४ चोर। ५सब। ६ पास। ७ स्त्री। ८ किसी प्रकार।

सुख पाय ॥
और घणें[1] हूँ देस्यूँ लाय । इम सुनि तिलकमती सुख पाय ॥
बंधुमती पतिसों बतलाय ॥ १०९ ॥
द्वीप थकी जिनदत्त जु आय । कहा कहूँ पति अब वा तणाँ[2] ॥
तिलकमतीके अवगुण घणां । कहा कहूँ पति अब वा तणाँ ॥
ब्याह समै उठगइ किँह थान । परण्यो चोर तहां सुखठान ॥११०॥
सो तसकर भूपतिकै जाय । भूषन वेष चोर करि ल्याय ॥
याकूं वह दीने तब आय । खोसि रखे मो ढिग मैं ल्याय ॥ १११ ॥
श्रेष्ठि देखि कंपित मन माहिं । तब ही राजस्थानक जाय ॥
घरे जाय राजाके पास । सब विरतंत कह्यो सुनि राय ॥ ११२ ॥
कह्यो वेष भूषन तौ आय । परिहरि चोर आनि द्यो ल्याय ॥
यह विधि श्रेष्ठि सुनी नृप बात । चाल्यौ निज घर कंपित गात ॥११३॥
साह सुतासों यह वच चयो । तैं यह हमकों कुण दुख दयो ॥
पतिकूं जाने है कै नाहिं । कह्यौ दीप बिन जानों काँहिं ॥ ११४ ॥

१ बहुत । २ उसका ।

कबहूँ दीपक हेत[1] सनेह[2]। मोकूँ मम माता नहिं देय ॥
श्रेष्ठि कहै किम ही विधि जान। तिलकमती जब बहुरि[3] बखानि[4] ११५
इक विधि करि मैं जानत तात। सो यह सुनौ हमारी बात ॥
जब पति आते मो ढिग जहां। तब उन पद धोवतथी तहां ॥११६॥
धोवत चरन पिछानूं सही। और इलाज यहां अब नहीं ॥
श्रेष्ठि कही भूपतिसों जाय। कन्या तो इम भांति बताय ॥ ११७॥
ऐसे सुनि तब बोल्यो भूप। यह तो विधि तुम जानि[5] अनूप[6] ॥
तसकर ठीक करनके काज। तुम घर आवेंगे हम आज ॥ ११८ ॥
श्रेष्ठि तबैं परसन[7] अति भयो। जाय तयारी करतो भयो ॥
तब राजा परिवार मिलाय। तबही श्रेष्ठितनैं घर आय ॥ ११९ ॥
प्रजा जु सकल इकट्ठी भई। तिलकमती बुलवाय सु लई ॥
नेत्र[8] मूंदि पद धोवत जाय। ये भी नाहिं पति मेरो आय ॥ १२० ॥

१ के लिये। २ तेल। ३ ओर। ४ कहा। ५ जानी। ६ अनुपम। ७ प्रसन्न। ८ आँख।

जब नृपके चरनाम्बुज[1] धोय। कहत भई ये ही पति होय ॥
राजा हँसि इम कहतो भयो। इन हमको तसकर कर दयो ॥ १२१ ॥
तिलकमती ऐसे फुनि[2] कही। नृप हो वा अनि[3] हो इम सही ॥
लोक हँसन लागे जिह वार। भूप मनै कीनो ततकाल ॥ १२२ ॥
वृथां हांस्य लोकां मति करौ। मैं ही पति निश्चय मन धरौ ॥
लोक कहैं कैसे यह वनी। आदि-अंतलों[4] भूपति भनी ॥ १२३ ॥
तब ही लोक सकल इम कह्यौ। कन्या धन्य भूप पति लह्यौ ॥
पूरव इन व्रत कीन्यौ सार। ताको फल यह फल्यौ अवार ॥ १२४ ॥
भोजन अंतर[5] करि उत्साह। श्रेष्ठि कियो सब देखत व्याह ॥
ताकूं पटरानी नृप करी। भूपति मनमें साता धरी ॥ १२५ ॥
एक समै पतियुत सो नार। गई सु जिनके गेह-मँझार[6] ॥
वीतराग मुख देख्यौ सार। पुन्य उपायो सुख दातार ॥ १२६ ॥

१ चरण-कमल=पाव। २ फिर। ३ अन्य कोई। ४ शुरूसे अखीरतक। ५ पश्चात्। ६ जिनमंदिरमें।

सभा विषैं श्रुतसागर मुनी। बैठे ज्ञान-निधी[1] बहु गुनी ॥
तिनकों वंदि परम सुख पाय। पूछें मुनिवरकौं इम राय ॥ १२७ ॥
पूरव भव मेरी पटनारि। कहा सु व्रत कीनों विधि धार ॥
जाकरि रूपवती इह भई। अधिक संपदा शुभ करि लई ॥ १२८ ॥
पूरवयोग सकल विरतंत। मुनिनिंदादिक सर्व कहंत ॥
अस सुगंध-दशमी-व्रत सार। सो इन कीन्हों सुखदातार ॥ १२९ ॥
ताकौ फल यह जानौ सही। ऐसे श्रुतसागर मुनि कही ॥
तबही आयौ एक पुमान[2]। जिन[3] श्रुतगुरु वंदे तजि मान ॥१३०॥
मुनिकूँ नमस्कारकरि सार। फेरि तहां नृप-देवि[4] निहार ॥
तिलकमतीके पावाँ परयो। अरु ऐसे सु वचन उच्चरयो ॥ १३१ ॥

दोहा।

स्वामिन! तो परसादतें, मैं पायो फल सार।

१ ज्ञानके भण्डार। २ पुरुष। ३ जिनेन्द्र देव। ४ राजाकी रानी।

व्रत सुगंधदशमी कियो, पूरव विधा धारि ॥ १३२ ॥
ता व्रतके परभावतें, देव भयो मैं जाय ।
तुम मेरी सहधर्मिणी, युग क्रमे देखन आय ॥ १३३ ॥

चौपई ।

थुति करि सुरे निज थानक जाय । लोकाँ यह लखि निश्चय थाय ॥
धनि सुगंध-दशमी-व्रत सार । ताके फल जु अनंत अपार ॥१३४॥
तब सबही जन यह व्रत धर्‍यो । अपनो कर्म महामल हरयो ॥
तिलकमती कंचनप्रभ राय । मुनिकूं नमि अपने घर जाय ॥ १३५ ॥
देती पात्रनकौं शुभ दान । करती जिनकी पूज अमानें ॥
पालै दरशन शील सुभाय । अरु उपवास करै मन लाय ॥ १३६ ॥
पतिव्रतागुण पालनहारि, पुनि सुगंध-दशमी व्रत धारि ॥
अंत समाधि थकी तजि प्रान । जाय लह्यो ईशान सु थान ॥१३८॥

१ चरण । २ देव । ३ धन्य । ४ जिसकी माप नहीं—अत्यधिक ।

सागर दोय जहां थिति[1] लही। शुभतैं[2] भयो सुरोत्तम[3] सही॥
नारी लिंग निंद्य छेदियो[4]। चय, शिववासी जिन वरनियो॥ १३९॥
जहां देव सेवा बहु करैं। निर्मल चमर तहां सिर ढरैं॥
और विभव अधिको जिह थान। पूरव पुन्य भयो नित आनि॥१४०॥
यह लखि गंध-दशैं-व्रत सार। कीजे हो भवि शर्म विचारि॥
जे भवि नर नारी व्रत करैं। ते संसार-समुदसों तरैं॥ १४१॥

दोहा।

श्रुतसागर ब्रह्मचारिका, ले पूरव अनुसार।
भाषासार बनायकैं। सुखित 'खुशाल' अपार॥ १४२॥

१ आयु। २ शुभ-पुण्यसे। ३ देव। ४ नष्ट किया।

Published by Biharilal Kathneia Jain, Proprietor Jain Sahitya Prasarak Karyalaya, Hirabagh, Bombay No. 4
Printed by D. S. Sakhalkar, at Lokasevak Press, Khatov Makanji's Wadi, Girgaum, Bombay.